बा-बापू की 150 जयंती के उपलक्ष्य में अकादमिक हस्तक्षेप पर चर्चा

वर्धा, 06 मार्च, 2018; महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के महात्मा गांधी फ्यूजी गुरूजी सामाजिक

कार्य अध्ययन केन्द्र में बा-बापू की 150 वीं जयंती के उपलक्ष्य में अकादमिक हस्तक्षेप पर विचार करने हेतु बैठक आयोजित की गई। बैठक में गोवा से आए वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्त्ता कलानंद मणी विशेष रूप से उपस्थित रहे। बैठक की अध्यक्षता केंद्र के निदेशक प्रो. मनोज कुमार ने की।

इस कलानंद मणी ने कहा कि यह एक आम सवाल है कि क्या गांधी जी की आज कोई प्रासंगिकता है? इसे समझने के लिए हमें उस पूरे परिप्रेक्ष्य को समझना होगा। आज के पूरे परिप्रेक्ष्य में यदि हम टिकाऊ सभ्यता का निर्माण करना चाहते हैं तो हमें गांधी प्रेरित करते हैं।

आगे उन्होंने कहा कि आज दुनिया के जीवित वैज्ञानिकों में से सबसे चर्चित स्टीफन हॉकिंग ने पर्यावरणीय संकट पर गंभीर चिंता जताई है। पर्यावरणीय असंतुलन दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। पिछले 200 वर्षों से जिस किस्म का विकास चल रहा है, यह उसी का नतीजा है। मानव सभ्यता का इतिहास 1.5 लाख वर्ष का है। लेकिन पिछले तीन दशक में प्रकृति-पर्यावरण को जितनी क्षति हुई है, वह इन 1.5 लाख वर्षों में सबसे ज्यादा है।

उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी ने 1909 में अत्यंत ही स्पष्ट शब्दों में तत्कालीन विकास और विज्ञान को शैतानी सभ्यता कहा था। इस विनाशकारी सभ्यता के उन तमाम प्रतिमानों को गांधी ने खारीज कर दिया था, जिस पर मौजूदा सभ्यता के हिमायती सबसे ज्यादा गर्व करते हैं। आज एक तरफ विकास का आकर्षण है तो दूसरी तरफ विनाश का दर्द है। गांधी ने संसदीय प्रजातंत्र पर सवाल उठाए थे, न्यायपालिका पर भी उनके सवाल थे।

आज जब हम देश की मौजूदा स्थिति देखते हैं तो इन मोर्चों पर संकट साफ-साफ दिखाई पड़ रहा है। दिल्ली में पर्यावरण प्रदूषण चरम पर पहुँचता जा रहा है। स्वास्थ्य के मोर्चे पर भी देश की हालत किसी से छुपी नहीं है। न्यायपालिका की भी स्थिति सामने है। सर्वोच्च न्यायालय के 4 जजों को प्रेस कान्फ्रेंस तक करना पड़ रहा है।

आगे उन्होंने कहा कि गांधी के हिन्द स्वराज्य को पहले तो गोखले ने कच्चा विचार कहते हुए खारीज किया था बाद में नेहरू ने भी इससे किनारा कर लिया था। उन्होंने बताया कि आज 4G का दौर है। ग्लोबलाइजेशन, ग्लोबल इकॉनॉमिक क्राइसिस, ग्लोबल टेटरिज्म और ग्लोबल वार्मिंग।

भारत सरकार के अपने आंकड़े के मुताबिक देश के 13 शहर मानव के रहने लायक नहीं रह गए हैं।

उक्त अवसर पर डॉ. शिवसिंह बघेल, डॉ. रवि कुमार, सन्मति जैन, डॉ. संदीप कुमार, अनिर्वाय घोष, डॉ. अमित कुमार विश्वास, डॉ. मुकेश कुमार, गजानन सु. निलामे, नरेश कुमार गौतम, जोगदंड शिवाजी, अभिषेक त्रिपाठी, डिसेन्ट कुमार साहू, खूशबू (पी-एच.डी.), ज्योति कुमारी (पी-एच.डी), साजन भारती, डॉ. आमोद गुर्जर सहित अन्य उपस्थित हुए।